Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 09, (फरवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 01–05

मछली व्यापार उदारीकरण और लघु मत्स्य पालन पर इसका प्रभाव

सुप्रीत कौर एवं श्री राम यादव

[1]पीएच.डी.– मत्स्य संसाधन प्रबंधन
[2]पीएच.डी. शोधार्थी, गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, लुधियाना, पंजाब, भारत।

Email Id: – ksupreet2906@gmail.com

मछली व्यापार उदारीकरण और इसके व्यापक प्रभावः लघु–स्तरीय मत्स्य पालन पर प्रभावों की समीक्षा

मत्स्य व्यापार उदारीकरण का तात्पर्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने के लिए मछली और समुद्री खाद्य उत्पादों पर शुल्क और कोटा जैसी व्यापार बाधाओं को कम करना या हटाना है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य बाजार पहुँच बढ़ाना, उपभोक्ताओं के लिए लागत कम करना और निर्यातक व आयातक, दोनों देशों के आर्थिक लाभ को संभावित रूप से बढ़ाना है। हालाँकि उदारीकृत व्यापार अक्सर अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच बढ़ाता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, लेकिन लघु–स्तरीय मत्स्य पालन (SSF) पर इसके प्रभाव जटिल और बहुआयामी हैं। ये मत्स्य पालन, जिनमें दुनिया के 90 प्रतिशत से अधिक मछुआरे कार्यरत हैं, बाजार की माँग, प्रतिस्पर्धा और संसाधनों तक पहुँच में बदलाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं (FAO, 2022)। यह समीक्षा आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आयामों में SSF पर व्यापार उदारीकरण के प्रभावों का अन्वेषण करती है।

1. आर्थिक प्रभाव

- **सकारात्मक प्रभावः**
  - बाजार पहुंच और आयः उदारीकरण एसएसएफ को उच्च मूल्य वाले अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच प्रदान कर सकता है, जिससे संभावित रूप से आय और रोजगार के अवसर बढ़ सकते हैं (बेने एट अल., 2010)।
  - मूल्य श्रृंखलाओं का विकासः यह शीत भंडारण, परिवहन और प्रसंस्करण सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचे और मूल्य श्रृंखला विकास को प्रोत्साहित करता है।
- **नकारात्मक प्रभावः**
  - बाजार में अस्थिरताः अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के संपर्क में आने से एसएसएफ वैश्विक मूल्य में उतार–चढ़ाव और व्यापार झटकों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं (बुश एट अल., 2019)

- असमान प्रतिस्पर्धा: छोटे पैमाने के मछुआरे अक्सर औद्योगिक बेड़े के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए संघर्ष करते हैं जो पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं, सब्सिडी और बेहतर तकनीक से लाभान्वित होते हैं (सुमैला और इब्राहिम, 2020)
- हाशिए पर: निर्यात–संचालित नीतियाँ छोटे, समुदाय–आधारित मछुआरों की तुलना में बड़े निर्यातकों और कंपनियों के पक्ष में हो सकती हैं।

2. पर्यावरणीय परिणाम

- संसाधनों का अतिदोहन: व्यापार के कारण बढ़ी हुई माँग, विशेष रूप से अनियमित या खराब तरीके से संचालित मत्स्य पालन में, अत्यधिक मत्स्यन को जन्म दे सकती है (पॉली एट अल., 2002)।
- आवास क्षरण: व्यापार को समर्थन देने के लिए बुनियादी ढाँचे का विकास (जैसे, बंदरगाह, प्रसंस्करण संयंत्र) तटीय पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित कर सकता है।
- स्थानीय भंडारों पर दबाव: उच्च–मूल्य वाली निर्यात प्रजातियों को लक्षित करने से उनकी संख्या में कमी आ सकती है, जिससे घरेलू उपभोग और निर्वाह मछुआरों के लिए कम संसाधन बचेंगे।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

- **खाद्य सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** जैसे–जैसे मछलियों को निर्यात बाजारों में भेजा जा रहा है, स्थानीय समुदायों को किफायती प्रोटीन तक पहुँच में कमी का सामना करना पड़ सकता है, जिसका असर पोषण पर पड़ सकता है (केंट, 1997)।
- **सामुदायिक विस्थापन:** व्यापार उदारीकरण तटीय जेंट्रीफिकेशन और पर्यटन को बढ़ावा दे सकता है, जिससे एसएसएफ समुदाय विस्थापित हो सकते हैं।
- **लैंगिक प्रभाव:** महिलाएँ, जो कटाई के बाद और विपणन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, व्यापार नीतियों में बदलाव से असमान रूप से प्रभावित हो सकती हैं (हार्पर एट अल., 2013)।

4. नीति और संस्थागत प्रतिक्रियाएँ

- **प्रमाणन और मानक:** अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता और पता लगाने योग्यता मानकों का अनुपालन उन SSF को बाहर कर सकता है जिनके पास उन्हें पूरा करने के लिए संसाधनों की कमी है।
- **प्रतिनिधित्व का अभाव:** व्यापार और मत्स्य पालन प्रशासन से संबंधित नीति निर्माण प्रक्रियाओं में SSF की अक्सर आवाज नहीं सुनी जाती।
- **समावेशी शासन की आवश्यकता:** प्रभावी नीतियों को पहुँच अधिकारों की रक्षा करते हुए और सह–प्रबंधन को बढ़ावा देते हुए SSF को मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करना चाहिए।

2. वैश्विक बाजार, स्थानीय आजीविका: लघु–स्तरीय मत्स्य पालन पर मत्स्य व्यापार उदारीकरण के प्रभाव का आकलन

बहुपक्षीय व्यापार समझौतों, कम शुल्कों और बढ़ती वैश्विक माँग से प्रेरित मत्स्य व्यापार के उदारीकरण ने दुनिया भर में मत्स्य पालन की गतिशीलता को बदल दिया है। जहाँ वैश्वीकरण और बाजार एकीकरण आर्थिक विकास का वादा करते हैं, वहीं लघु–स्तरीय मत्स्य पालन (SSF) अक्सर असमान व्यापार लाभों का खामियाजा भुगतते हैं। यह समीक्षा इस बात का पता लगाती है कि वैश्विक मत्स्य बाजारों का विस्तार SSF समुदायों की आजीविका, खाद्य सुरक्षा और स्थिरता को कैसे प्रभावित करता है।

1. वैश्वीकरण और मछली व्यापार का विस्तार

पिछले दो दशकों में, वैश्विक मछली व्यापार में तेजी से वृद्धि हुई है। एफएओ (2022) के अनुसार, कुल वैश्विक मछली उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार किया जाता है। उदारीकरण ने विकासशील देशों को झींगा, टूना और स्नैपर जैसी उच्च–मूल्यवान प्रजातियों के प्रमुख निर्यातक बनने में सक्षम बनाया है।

हालाँकि ये गतिशीलताएँ आर्थिक अवसर प्रदान करती हैं, लेकिन अक्सर ये संसाधनों तक स्थानीय पहुँच और लघु एवं मध्यम उद्यमों (SSF) के लिए दीर्घकालिक स्थिरता की कीमत पर आती हैं।

2. लघु–स्तरीय मछुआरों पर प्रभाव

क. आर्थिक दबाव

- लघु–स्तरीय मछुआरों को औद्योगिक बेड़े और जलीय कृषि फर्मों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई होती है, जो पैमाने की अर्थव्यवस्था, सब्सिडी और बेहतर बुनियादी ढाँचे से लाभान्वित होते हैं (बेने एट अल., 2010)।
- निर्यात–आधारित विकास पर ध्यान केंद्रित करने से मछलियाँ स्थानीय बाजारों से अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों की ओर पुनर्निर्देशित हो सकती हैं, जिससे स्थानीय खाद्य पहुँच और मूल्य निर्धारण कम हो सकता है (केंट, 1997)।

ख. रोजगार और आजीविका विस्थापन

- मछुआरा समुदायों में पारंपरिक भूमिकाएँकृविशेषकर कटाई के बाद की गतिविधियाँ जैसे सुखाने, प्रसंस्करण और बिक्रीकृअक्सर औद्योगिक कार्यों द्वारा विस्थापित हो जाती हैं।
- महिलाएँ, जो इस कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा हैं, विशेष रूप से असुरक्षित हैं (हार्पर एट अल., 2013)।

3. पर्यावरणीय परिणाम

- निर्यात–आधारित अति–मत्स्य पालन अक्सर एसएसएफ के लिए महत्वपूर्ण स्टॉक को कम कर देता है (पॉली एट अल., 2002)।
- पर्याप्त नियामक तंत्रों के बिना व्यापार उदारीकरण से शोषण में वृद्धि हो सकती है।
- निर्यात–उन्मुख मत्स्य पालन उच्च–मूल्य वाली प्रजातियों को प्राथमिकता देते हैं, और एसएसएफ द्वारा पारंपरिक रूप से उपयोग की जाने वाली पारिस्थितिक रूप से संतुलित बहु–प्रजाति संग्रहण प्रथाओं को दरकिनार कर देते हैं।

4. खाद्य सुरक्षा और पोषण संबंधी निहितार्थ

- हालांकि कई निम्न–आय वाले देशों में मछली प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, व्यापार उदारीकरणः
- घरेलू बाजारों में सस्ती मछली की उपलब्धता को कम कर सकता है (बेल्टन और थिल्स्टेड, 2014)।
- आयातित या प्रसंस्कृत उत्पादों की ओर उपभोग पैटर्न को स्थानांतरित कर सकता है।
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता पैदा कर सकता है, जो महामारी या आर्थिक मंदी जैसे झटकों के प्रति संवेदनशील हैं।

5. नीति और शासन में कमियाँ

- समावेशी नीति ढाँचों का अभाव अक्सर मत्स्य पालन संघोंएस एस एफ को व्यापार लाभों से वंचित कर देता है।
- व्यापार वार्ताओं और मत्स्य पालन प्रशासन मेंएस एस एफ का प्रतिनिधित्व अक्सर कम होता है।
- अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता मानक और इकोलेबल, भले ही नेकनीयत हों, संसाधन–विहीन SSF के लिए दुर्गम हो सकते हैं (पोंटे, 2008)।

3. दोधारी तलवारः मत्स्य व्यापार उदारीकरण और लघु मत्स्य पालन पर इसके परिणाम

मछली व्यापार उदारीकरण को आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, बाजार की दक्षता में सुधार लाने और विकासशील देशों को वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकृत करने के साधन के रूप में वैश्विक स्तर पर बढ़ावा दिया गया है। उदारीकरण ने जहाँ कई देशों के लिए नए बाजार खोले हैं और विदेशी मुद्रा आय में वृद्धि की है, वहीं इसने कई जटिल परिणाम भी उत्पन्न किए हैं, विशेष रूप से लघु मत्स्य पालन (SSF) के लिए। यह समीक्षा इस बात की आलोचनात्मक पड़ताल करती है कि मत्स्य व्यापार उदारीकरण

किस प्रकार एक दोधारी तलवार की तरह काम करता है: एक ओर आर्थिक लाभ प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर स्थानीय आजीविका, समानता और स्थिरता को कमजोर करता है।

अवसर:

- **निर्यात राजस्व में वृद्धि:** व्यापार उदारीकरण ने कुछ देशों को टूना, झींगा और तिलापिया जैसी उच्च–मूल्य वाली प्रजातियों का लाभ उठाने में सक्षम बनाया है, जिससे विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई है (एफएओ, 2022)।
- **प्रसंस्करण और निर्यात क्षेत्रों में रोजगार सृजन:** मूल्य श्रृंखलाओं का विस्तार हुआ है, विशेष रूप से श्रम–प्रधान प्रसंस्करण उद्योगों वाले विकासशील देशों में (बेने एट अल., 2010)।

असमानताएँ:

- **छोटे पैमाने के मछुआरों का हाशिए पर होना:** बड़े वाणिज्यिक हितधारक अक्सर उदारीकरण का लाभ उठाते हैं, जबकि लघु–स्तरीय मत्स्य पालन उद्यमों (एस एस एफ) को पूँजी, प्रमाणन योजनाओं और बुनियादी ढाँचे तक पहुँचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है (पोंटे, 2008।
- **मूल्य अस्थिरता के प्रति संवेदनशीलता:** लघु–स्तरीय मत्स्य पालन उद्यम (एस एस एफ) वैश्विक कीमतों में उतार–चढ़ाव और व्यापार व्यवधानों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, और उनमें औद्योगिक संचालकों जैसा वित्तीय लचीलापन नहीं होता (बुश एट अल., 2019)।

2. मछुआरा समुदायों पर सामाजिक प्रभाव

- पारंपरिक आजीविका का क्षरण: निर्यात–उन्मुख नीतियों के औद्योगिक उत्पादन को प्राथमिकता देने के कारण, छोटे पैमाने के मछुआरे पारंपरिक मछली पकड़ने के मैदानों और बाजारों तक पहुँच खो सकते हैं।
- **लैंगिक परिणाम:** महिलाएँ, जो कटाई के बाद की गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, अक्सर मछली प्रसंस्करण के व्यापार–संचालित एकीकरण के कारण आय और प्रतिष्ठा खो देती हैं (हार्पर एट अल., 2013)।
- **खाद्य सुरक्षा संबंधी समझौते:** मुख्य मछली प्रजातियों के निर्यात से स्थानीय उपभोक्ताओं के लिए उपलब्धता और सामर्थ्य कम हो सकता है, जिससे तटीय समुदायों में पोषण कम हो सकता है (बेल्टन और थिल्स्टेड, 2014)।

3. पर्यावरणीय दबाव और असंवहनीय प्रथाएँ

- **संसाधनों का अतिदोहन:** वैश्विक माँग को पूरा करने की चाहत, विशेष रूप से खराब प्रबंधित मत्स्य पालन में, अत्यधिक मत्स्यन को जन्म दे सकती है, जिससे एसएसएफ के संसाधन आधार को सीधे तौर पर खतरा हो सकता है (पॉली एट अल., 2002)।
- **जलीय कृषि का गहनीकरण:** व्यापारिक दबावों के कारण जलीय कृषि का तीव्र विकास हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप

कभी–कभी आवास क्षरण, प्रदूषण और रोग प्रकोप होते हैं।

4. शासन संबंधी चुनौतियाँ और व्यापार असमानताएँ

- **प्रवेश में बाधाः** इको–लेबल, एचएसीसीपी अनुपालन और ट्रेसिबिलिटी आवश्यकताओं जैसे व्यापार मानक एसएसएफ पर असमान रूप से बोझ डालते हैं, जिनके पास अक्सर अनुपालन के लिए संस्थागत समर्थन का अभाव होता है (पोंटे, 2008)।
- **नीतिगत बहिष्कारः** एसएसएफ को अक्सर मत्स्य व्यापार पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निर्णय लेने से बाहर रखा जाता है, जिससे उनके हितों की रक्षा करने की उनकी क्षमता कमजोर हो जाती है (एलिसन और एलिस, 2001)।
- **सब्सिडी सुधारः** जबकि हानिकारक मत्स्य सब्सिडी को खत्म करने के लिए डब्ल्यूटीओ के प्रयास सराहनीय हैं, सुधारों को सामाजिक सुरक्षा जाल पर विचार करना चाहिए, जिस पर छोटे पैमाने के मछुआरे निर्भर हैं (सुमैला और इब्राहिम, 2020)।

निष्कर्ष

मछली व्यापार उदारीकरण ने वैश्विक मत्स्य पालन परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से नया रूप दिया है, जिससे अवसर और चुनौतियाँ दोनों पैदा हुई हैं। लघु–स्तरीय मत्स्य पालन (एस एस एफ) के लिएकृजो स्थानीय आजीविका, खाद्य सुरक्षा और सांस्कृतिक पहचान के लिए महत्वपूर्ण हैंकृपरिणाम जटिल और अक्सर असमान होते हैं। हालाँकि उदारीकृत व्यापार बाजार पहुँच के माध्यम से आय बढ़ा सकता है और क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित कर सकता है, लेकिन ये लाभ अक्सर औद्योगिक खिलाड़ियों द्वारा हथिया लिए जाते हैं, जिससे लघु–स्तरीय मत्स्य पालन हाशिए पर चले जाते हैं। निर्यात–संचालित बाजारों के विस्तार ने संसाधन प्रतिस्पर्धा को तीव्र किया है, अत्यधिक मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया है, और उन मत्स्य भंडारों की स्थिरता को खतरे में डाला है जिन पर लघु–स्तरीय मत्स्य पालन निर्भर हैं। इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मानकों और प्रमाणन योजनाओं का अनुपालन अक्सर लघु–स्तरीय मछुआरों की वित्तीय और तकनीकी क्षमता से अधिक होता है, जिससे वे आकर्षक बाजारों से बाहर हो जाते हैं। सामाजिक रूप से, व्यापार उदारीकरण पारंपरिक आजीविकाओं के क्षरण, वैश्विक बाजार के झटकों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि और स्थानीय आहार में सस्ती मछलियों की उपलब्धता में कमी का कारण बन सकता है। मछुआरा समुदायों के भीतर महिलाएँ और अन्य हाशिए पर रहने वाले समूह विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। इन असमानताओं को दूर करने के लिए, व्यापार नीतियों को समावेशिता और स्थिरता की ओर पुनर्निर्देशित किया जाना चाहिए। इसमें बाजारों तक निष्पक्ष पहुँच सुनिश्चित करना, शासन में एसएसएफ की भागीदारी का समर्थन करना, स्थानीय संस्थाओं को मजबूत करना और पारंपरिक अधिकारों की रक्षा करना शामिल है। ऐसे उपायों के बिना, मत्स्य व्यापार उदारीकरण एक दोधारी तलवार की तरह काम करता रहेगा, जो लघु–स्तरीय मत्स्य पालन के लिए समानता, लचीलेपन और दीर्घकालिक व्यवहार्यता की कीमत पर आर्थिक संभावनाएँ प्रदान करेगा।